लोकनाट्यो की पंरम्परा में विदर्भ (झाड़ीपट्टी) का खड़िगम्मत. एक शोध अध्ययन

भारतीय कला संस्कृति का लोकनाट्य यह एक अविभाज्य अंग है जो पुरातन समय से ही भारत की मूल तत्वों का प्रदर्शन प्रस्तुति के माध्यम से कर रहा है। भारतीय कला अपनी प्राचीनता तथा विवधता के लिए विख्यात रही है। आज जिस रूप में 'कला' शब्द अत्यन्त व्यापक और बहुअर्थी हो गया है, प्राचीन काल में उतना विकसित न था। यदि ऐतिहासिक काल को छोड़ और पीछे प्रागैतिहासिक काल पर दृष्टि डाली जाए तो विभिन्न नदियों की घाटियों में पुरातत्त्वविदों को खुदाई में मिले असंख्य पाषाण उपकरण भारत के आदि मनुष्यों की कलात्मक प्रवृत्तियों के साक्षात प्रमाण हैं। लोक नाट्य वास्तव में जनसाधारण की अभिव्यक्ति का एक सक्तिशाली साधन और मनोरंजन से साथ ही जनजागृति का माध्यम रहा है। भारत में ऐसे लोकनाट्यों की परंपरा अबाधित चलती आ रही है और चलती रहेगी इसमें कोई संदेह नहीं है। मनुष्य समाज के मनुषत्व को मूर्त रूप देने का कार्य इन लोकनाट्यों की माध्यम से ही होता है। महाराष्ट्र में विदर्भ का खड़ीगंमत उसी परंपर का एक अंग है।

खड़ी गंमत ने आज के आधुनिकीकरण में भी अपना अस्तित्व कायम रखा है साथ ही कुछ आवश्यक परिवर्तनों के साथ अपने उद्देश्य को भी सिद्ध कर रहा है। जन साधारण के जीवन में किए गए अमूर्त बदलाओं का दायित्व अपने कंधे पर लिए यह आज भी विदर्भ का प्रतिनिधित्व कर रही है। इस लोक नाट्य ने भारत में प्रचलित लोकनाट्य की परंपरा को आगे बढ़ाते हुये विदर्भ की लोक नाट्य परंपरा अबाधित रखी है।

खड़ी गंमत ये वह लोकनाट्य है, जो समाज जनजागरण का हित साथ लेकर चल रही है। और जनसामान्य जीवन में हो रहे बदलाव यह इसका एक सुंदर उदाहरण है। घर में बुजुर्गों द्वारा होती वार्तालाप से बचपन से ही इस लोकनाट्य के बारें में एक उत्कंठ मनीषा रही है, जो आज भी वैसी ही है और यही कारण भी है की और इस विषय पर कुछ लिखने की भी।

इस लघु शोध प्रबंध में खड़ी गंमत का विचार भारतीय लोकनाट्य की तुलना में किया जाए गा। भारत का पिछड़ा समझे जाने वाला विदर्भ प्रांत भले ही राजनैतिक और आर्थिक दृष्टि से मुख्य धारा में ना हो पर संस्कृति प्रवाह में ये वही योगदान दे रहा है, जो भारत के अन्य लोकनाट्य परंपरा को आगे बढ़ाने का काम कर रहा है।

पहले अध्याय में इन्ही बातों की तुलना की जाए गी। भारत के कुछ प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण लोकनाट्यों की पहचान और उसी के साथ खड़ी गंमत का तुलनात्मक अध्ययन की पृष्टभूमि। और यह लोकनाट्य भी एक महत्व पूर्ण अंग है, ये साबित करने का प्रयत्न किया जाएगा। इसके लिए सबसे पहले विद्वानों द्वारा दी गयी कुछ परिभाषाएँ आर उनका विश्लेषण कर लोकनाट्य के महत्व को प्रतिपादित किया जाएगा।

जावे त्यांच्या वंशी, तेंव्हा कळे !

अर्थात किसी व्यक्ती,विचार,या शैली को समझने पूर्व हमें उसके वंश का होकर सोचना पड़ता है,स्वयं वह व्यक्ति बनकर सोचना होता है। खड़ी गंमत विदर्भ की भौगोलिक एवं सांस्कृतिक पृष्टभूमि को उजागर करती है। लोकनाट्यों में पात्रों द्वारा अभिनय इतना सहज होता है की पात्र मंच के साथ ही दर्शकावकाश में भी उपस्थित होता है और दर्शकों को भी अभिव्यक्त करता है।

आकृतिबंध अभिनय का आग्रह करता हमारा आज के आधुनिक नाटक, प्रस्तुति के समय पीटर ब्रुक के डेडली थिएटर को साकार करता नजर आता है वही हमारा लोकरंगमंच सहजभियानी से उपस्थित हर दर्शक के अंतरात्मा में सीधा प्रवेश कर जाता है। खड़ी गंमत के अभिनय से लेकर सवादों तक और संवादों से लेकर प्रत्येक नाट्यांग में ऊर्जा उपस्थित होती है। उसी के साथ एक और विशेषता है कि बिना किसी नुकसान के आसनी से उपलब्ध होने वाले वस्त्र या वाद्यों के साथ आसानी से मिलने वाली किसी खाली जगह पर इस कि प्रस्तुति की जा सकती है।

खड़ी गंमत यह लोकनाट्य आज समसमायिक प्रश्नों को प्रस्तुत कर अपनी प्रायोगिकता स्पष्ट करता है। एक साधारण कलाकार जब प्रस्तुति में भगवान कृष्ण बन जाता है तो समूचा दर्शक वर्ग भी उसे कृष्ण के रूप में ही स्वीकार करता है, जिस साधारणीकरण की बात हमारे शास्त्र करते हैं वह यहाँ सपष्ट परिलक्षित होता है।

लोक वार्ता का अंग रहने वाला लोकनाट्य और उसके दो मुख्य भेद है -

1) प्रहसनात्मक 2) नृत्य नाट्यात्मक इनकी सहायता से खड़ी गंमत और लोकनाट्य परंपरा की तुलना करने का प्रयास किए जनेकी संभावना है।

इसी अध्याय के दूसरे प्रकरण में भारतीय लोकनाट्य का उदभव और संस्कृत नाट्य परंपरा के बाद हुए बदलाओं कि प्रक्रिया में उत्पन्न प्रादेशिक बोलियों और लोकाचार ने किस प्रकार अपने अभिव्यक्ति के माध्यम ढूंढ लिये यह भी स्पष्ट करने का प्रयत्न किया जाएगा।

दूसरे उप-प्रकरण में नौटंकी (उत्तर प्रदेश),भवाई (गुजरात),अंकीया नाट (आसाम),कुडियाट्टम,यक्षगान (कर्नाटक),माच (मध्य प्रदेश),तमाशा (महाराष्ट्र), के परिचय के साथ और साथ खड़ी गंमत के साम्यों का अध्ययन भी प्रस्तुत किया जायेगा । महाराष्ट्र के लोकनाट्य और उनकी विशेषताओं का भी उल्लेख इस अध्याय में किया जाएगा।

अगले अध्याय में महाराष्ट्र की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि और साथ ही विदर्भ के लोकनाट्य खड़ी गंमत का उदय और विकास स्पष्ट करने के लिए विदर्भ कि सांस्कृतिक पृष्टभूमि पुरातन लोककलाएं,साथ ही कुछ मुख्य नाट्य प्रकार, विधि नाट्य,मनोरंजनात्मक प्रकार इन सब बिन्दुओं से खड़ी गंमत के उदय को प्रस्तुत किया जाएगा। शाहीर और तमाशा यह आज महाराष्ट्र के लोकनाट्य की पहचान बन गए है वास्तव में इसी खड़ी गंमत से उत्पन्न हुये है बात को स्पष्ट करने के लिए कुछ विद्वानों के विचार प्रस्तुत किए जाएंगे।

अगले अध्याय में खड़ी गंमत के कृतित्व पक्ष प्रस्तुत होगा, जिसमें उसकी विषयों और रचनाओं के माध्यम से खड़ी गंमत कि प्रस्तुति के अंग को स्पष्ट किया गया है। प्रस्तुत किए जाने वाले विषयों को तीन भागों में बाँट कर कालानुरूप परिवर्तनों को भी स्पष्ट किया जाएगा। 1) पौराणिक एवं आख्यान मूलक 2) ऐतिहासिक एवं वीरकथात्मक 3) हास्य परक तथा मनोरंजनात्मक इन तीन भागों में विभाजित कर खड़ीगंमत में उठाए जाने वाले ऐतिहासिक विषयों से लेकर आज तक के उठाए जाने वाले समसामायिक प्रश्नों और उसके मंचन पर विस्तार से चर्चा कीजाएगी। मनोरंजन के साथ ही जंजागृति में अपनी भूमिका संभाल ने वाले इस नाट्य के योगदान का महत्व प्रस्तुत किया जाना है।

अगले अध्याय में उसके प्रस्तुति पक्ष को उजागर किया गया है। रंगशाला से लेकर मंडली प्रबंधन और गुरु परंपरा से लेकर दर्शक वर्ग का महत्व और साथ ही उनका इस कला के प्रति लगाव भी समझने का प्रयास किया जागा। आखरी में किस प्रकार खड़ी गंमत लोक प्रबोधन कर लोगों में एक विश्वास, और जीने कि उम्मीद निर्माण कर रहा है यह एक उदाहरण प्रस्तुत करने का प्रयास होगा।

विदर्भ का ये खड़ी गंमत झाड़ीपट्टी तक सीमित होता नज़र आ रहा है। झाड़ीपट्टी का मतलब विदर्भ के उस अंचल से है जो चन्द्रपुर, भंडारा, गोंदिया, गडचिरोली से है, जो इस नाम से पहचाना जाता है। यह लोकनाट्य वर्तमान में आधुनिकता के दायरे में अपने अस्तित्व बचाने का पर्यास कर रहा है। मराठी लेखन संस्कृति ने भी उसे कभी उचित स्थान नहीं दिया। परिचय स्वरूप में ही उसे आज तक लिखा गया है। डॉ. वाकोड़े, डॉ. हरिशचन्द्र बोरकर,हीरामन लांजे और प्रा.मनोज उज्जेंकर जैसे कला प्रेमियों ने इसे लेखन में स्थान देकर इसके महत्व को समझा है। खड़ी गम्मत की प्रस्तुति का जसधारण पर होता प्रभाव स्पष्ट करना इस शोध मुख्य उद्देश्य है।

प्रस्तुत शोध में प्राथमिक तथा द्वितीयक स्रोतों का प्रयोग किया गया है साथ ही प्रस्तुत शोध में क्षेत्र सर्वेक्षण,साक्षात्कार तथा प्रश्नावली विधि का भी सहारा लिया जाएगा और खड़ी गंमत का लोक जीवन पर पड़ता असर औ उसका योगदान स्पष्ट किया जाएगा। इस प्रकार भारतीय लोकनाट्यों कों सभी पंरम्परा में विदर्भ प्रांत का खड़ी गम्मत भी अपने प्रान्त का नेतृत्व करें और इस लोकनाट्य कोभी भारतीय लोकनाट्य की मुख्य धारा का एक हिस्सा बनने में कुछ दिशा मिलें।

उद्देश :

खड़ी गम्मत के बलस्थानों,और कलाकारों की सामाजिक परिस्थिति का अध्ययन साथ ही जसामान्य पर होते परिणाम।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध कार्य में मुख्यतः क्षेत्र सर्वेक्षण व विश्लेषणात्मक प्रविधि का प्रयोग किया जाएगा

तथ्य संकलन

प्राथमिक स्रोत -

अवलोकन विधि (observation)
साक्षात्कार (Interview)
प्रश्नावली विधि (Questionnaire) आदि।

द्वितीयक स्रोत -

विषय से संबन्धित प्रकाशित पुस्तकें, पत्रिकाओं के आलेख, वीडियो तथा अन्य **स्रोतों** का अध्ययन।

लेखन प्रारूप

इस शोध का रिपोर्टिंग विडिओ,औडियो, चित्रों, एवं थेसिस के माध्यम से किया जाएगा।

अमोल अनंतरव अढावु

संदर्भ सूची : -

1) महाराष्ट्राची लोकधारा : हिराचंद लाजे
2) विदरभाची खड़िगम्मत : सदानंद बोरकर
3) वैदर्भिय लोककला, खड़िगम्मत : मनोज उज्जेनकर
4) महाराष्ट्राची लोकधारा: प्रभाकर मांडे
5) झादीपट्टी रंगभूमि : हरिश्चंद्र बोरकर
6) समग्र झादीपट्टी: हिराचंद लांजे
7) बोरकर, हरिशचन्द्र,विदर्भ की लोक विधा, साकोली : तारा प्रकाशन, (2009)
8) कानेड माणिक, जागतिक रंगभूमी 1 : पूर्वरंग. पुणे: सहन प्रकाशन, (2007).
9) भारती ओमप्रकाश,बिहार के पारमपरिक नाट्य. इलाहाबाद: उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र, (2007).
10) देसाई बापुराव लोकसाहित्य शास्त्र. कानपुर: विकास प्रकाशन. (2004).
11) ढेरे रामचन्द्र लोक दैवतांचे विश्व. पुणे: पद्यगंगा प्रकाशन. (1996).
12) सरदेसाई माया,भारतीय रंगभूमिची परंपरा पुणे: स्नेहवर्धन प्रकाशन. (1996).
13) शर्मा रामविलस.भारतीय साहित्य की भूमिका. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन, (1996).
14) उपाध्याय कृष्णदेव लोकसाहित्य की भूमिका
15) लांजे हीरामन. .खड़ी गंमत नागपुर : मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र नागपुर.
16) तिवारी हरीश कुमार,मंच प्रदर्शन में कलाकार एवं श्रोता.नई दिल्ली:संजय प्रकाशन,(2005).
17) राधाकृष्णन सर्वपल्ली,आज का भारतीय साहित्य. नई दिल्ली : शाहित्य अकादमी. (2007).
18) मधुर शिवकुमार,मध्यप्रदेश का लोकनाट्य माच। भोपाल: म.प्र.आदिवासी लोककला परिषद।(2007).
19) माथुर जगदीशचंद्र(2000). परम्पराशील नाट्य. पटना: बिहार राष्ट्र भाषा परिषद.2000.
20) उज्जेनकर मनोज,खड़ी गमत वैदर्भीय लोक कला
21) ओजा,दशरथ ,हिन्दी नाटक उद्भव :और विकास राजपाल अँड संस प्रकाशन,2003
22) गार्गी ,बलवंत :फोक थियेटर ऑफ इंडिया,युनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन ,1966

23) दुबे, श्यामसुन्दर :लोक परम्परा, पहचान एवं प्रवाह, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड , जगतपुरी दिल्ली , 2003

24) भारती , ओमप्रकाश :'बिहार के पारंपरिक नाट्य' ,उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, इलाहाबाद,2007,

25) शर्मा, हरद्वारी लाल, 'लोक वार्ता विज्ञान', उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ, 1990

26) दास,श्रीकृष्ण, 'हमारी नाट्य परंपरा, साहित्यकार संसद, प्रयाग